काव्य के प्रकार(Forms of Poetry)

1. दृश्य काव्य(Completed)

2. श्रव्य काव्य

3. मिश्र काव्य (चम्पू काव्य)

श्रव्य काव्य

श्रव्यकाव्य के अंतर्गत, महाकाव्य(Completed), खण्डकाव्य, गद्यकाव्य, कथा, आख्यायिका तथा चम्पूकाव्य आते हैं । इन सबका अभिनय नही किया जाता है इसलिये इनको श्रव्यकाव्य कहा जाता है । दृश्यकाव्य के समान ही श्रव्यकाव्य का मूल प्रयोजन पाठकों को रसानन्द की अनुभूति कराना है ।

खण्डकाव्य

खण्डकाव्यं भवेत्काव्यस्यैकदेशानुसारि च ।

अर्थात् काव्य के अंश का अनुकरण करने वाला खण्डकाव्य होता है । इसमें नायक के जीवन की किसी एक घटना अथवा पक्ष का विस्तार से वर्णन किया जाता है । आकार में यह महाकाव्य से छोटा होता है । यह महाकाव्य के एक या दो सर्ग के बराबर होता है ।

काव्य की समस्त विशेषताएं इसमें नही पायी जाती । नाट्य संधियों का अभाव होता है । इसका कथानक ऐतिहासिक, काल्पनिक या भिन्न कोई भी हो सकता है । एक या दो छंदों से ही संपूर्ण कथा का वर्णन होता है ।

महाकवि कालिदास प्रणीत **'मेघदूत'** को खण्डकाव्य का सुन्दर उदाहरण माना जाता है । इसमें यक्ष के जीवन की एक प्रसिद्ध घटना को अत्यन्त मार्मिक रूप से चित्रित किया गया है । इसका कथानक अत्यन्त छोटा है परन्तु प्रकृति का चित्रण और यक्ष एवं यक्षिणी की विरह-वेदना के वर्णन में कथावस्तु का अच्छा विस्तार हुआ है ।

चम्पूकाव्य(मिश्रकाव्य)

गद्यपद्यमयं काव्यं चम्पूरित्यभिधीयते ।

गद्य और पद्य से युक्त रचना चम्पूकाव्य कहलाता है । गद्य-पद्य की मिश्रित शैली से इसे मिश्रितकाव्य भी कहा जाता है । इतिवृत का उच्छवासों में विभाजन होता है । कुछ मिश्रितकाव्य स्तवक या उल्लास में भी विभाजित होते हैं । उल्लासों की संख्या आठ से अधिक व कम भी हो सकती है इस विषय में कोई विशेष उल्लेख नही हैं ।

नायक यक्ष, गन्धर्व, मनुष्य, पशु अथवा कोई भी हो सकता है । पात्रों की संख्या का कोई नियम नही है तथा नायिका का होना भी आवश्यक नही है । मुख्य रस श्रृंगार, वीर अथवा शान्त रस ।

कवि इसमें प्रकृति का सुन्दर चित्रण करता है। दुर्जन पुरुषों की निन्दा तथा सज्जनों की स्तुति होती है। महाकाव्य के समान ही इसका प्रारंभ मंगलाचरण से तथा समापन भरतवाक्य से होता है। इस प्रकार गद्य-पद्य का मिश्रण होने से इसमें अनुपम सौन्दर्य होता है। इसमें पाठक को एक साथ पद्य और गद्य का आनन्द प्राप्त होता है।

त्रिविक्रम भट्ट द्वारा रचित 'नलचम्पू' इसका प्रथम उदाहरण है। बाद में सोमदेव सूरी विरचित यशस्तिलक चम्पू, हरिश्चन्द्र कृत जीवन्धचम्पू, भोजराज कृत रामायणचम्पू, अनन्त भट्ट कृत भारतचम्पू आदि अनेक महत्त्वपूर्ण चम्पू काव्यों की रचना हुई।